टिप्पणी

4

विकास संचार

पहले के पाठ में आपने सीखा है कि प्रभावी संचार एक द्विरेखीय प्रक्रिया है। अब तक हमने जाना है कि ''संप्रेषण'' शब्द जन माध्यमों के अनेक प्रकारों जैसे मुद्रित सामग्री रेडियो, टेलीविजन आदि के लिए प्रयुक्त होता है। आपको यह भी जानना चाहिए कि संचार का उपयोग सशक्तीकरण के लिये भी किया जाता है। दूसरे शब्दों में विकास सम्बन्धी गतिविधियों में जन–जन की सहभागिता को सुनिश्चित करने के लिए संचार को एक उपकरण के तौर पर प्रयुक्त किया जाता है।

सामाजिक–आर्थिक तथा तकनीकी परिवर्तनों के अवसर व चुनौतियों का सफलता से जवाब देने के लिए लोगों के लिये ज्ञान और सूचना प्राप्त करना आवश्यक है। लेकिन यदि ज्ञान और सूचना को उपयोगी बनाना है तो इसका संचार लोगों तक तत्काल करना होगा। विकासशील देशों में लाखों लोग सूचना तथा ज्ञान के एक विस्तृत क्षेत्र से वंचित रहे हैं, ग्रामीण निर्धन विशेष रूप से परम्परागत माध्यम तथा नयी सूचनाओं और जीवन में सुधार लाने वाली संचार तकनीकी से अलग–थलग रहते हैं।

इस पाठ में आप विकास सम्बन्धी गतिविधियों को बढ़ाने के लिए संचार के उपयोग के विषय में जानेंगे–

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित कार्य कर सकेंगे:

- विकास संचार की परिभाषा
- यह बता सकेंगे कि किस प्रकार विकास संचार में जन माध्यमों के विभिन्न प्रकारों का उपयोग किया जाता है।
- विकास के कुछ प्रमुख क्षेत्रों की सूची
- विकास अभियान की व्याख्या

टिप्पणी

4.1 विकास संचार : परिभाषा

यहाँ 'विकास संचार' में आपने पाया कि दो शब्द निहित हैं 'विकास' तथा 'संचार'। अब आप जानते हैं कि संचार का अर्थ क्या है। आप यह भी जानते हैं कि संचार एक समझा जा सकने वाला संदेश है या अनुभवों का बाँटना है। जब हम संचार की बात करते हैं, विकास के सन्दर्भ में, तो हम संचार के विभिन्न प्रकारों जैसे अंतर–वैयक्तिक, समूह तथा जनसंचार पर चर्चा करते हैं।

आइये अब हम 'विकास' शब्द समझने का प्रयास करें। इसको परिभाषित करना सरल नहीं है क्योंकि इसका अर्थ संदर्भ पर निर्भर करता है। विकास परिवर्तन का सूचक है। यह परिवर्तन स्थिति को बेहतर बनाने के लिए होता है। यह सुधार या प्रगति के लिये सामाजिक या आर्थिक परिवर्तन भी हो सकता है।

जब हम विकास संचार की बात करते हैं, तो यह ऐसे संचार के विषय में होता है जिसका उपयोग विकास में किया जा सके। यह परिवर्तन या किसी प्रकार के सुधार के लिए संचार के प्रयोग के विषय में होता है। यहाँ हम लोगों की सामाजिक–आर्थिक स्थितियों में परिवर्तन लाने के लिए विभिन्न प्रकार के संदेशों का प्रयोग करते हैं। इन संदेशों की रचना लोगों के व्यवहार को परिवर्तित करने के लिए या जीवन स्तर में सुधार के लिए किया जाता है। अतएव विकास संचार विकास को बढ़ावा देने वाले संचार के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। वह लोग जो विकास सम्बन्धी मुद्दों पर कार्यक्रम निर्माण करते हैं या लिखते हैं विकास संप्रेषक के रूप में जाने जाते हैं।

विकास संप्रेषक की भूमिका

विकास संप्रेषक विकास की प्रक्रिया की व्याख्या सामान्य जन के लिए इस प्रकार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है कि लोग इसे स्वीकार करें। इन उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए एक विकास संप्रेषक को –

- विकास और संचार की प्रक्रिया को समझना होगा
- पेशेवर तकनीकी में ज्ञान रखना होगा तथा सूचना प्राप्त करने वालों को समझना होगा
- लाखों लोगों के लिऐ विकास संदेश इस प्रकार तैयार तथा वितरित करना होगा कि इसे लोग प्राप्त करें, समझें, स्वीकार करें तथा प्रयुक्त करें। यदि वे यह चुनौती स्वीकार करते हैं तो वे लोगों को एक समाज तथा एक राष्ट्र के हिस्से के रूप में अपनी पहचान करा पायेंगे। यह पहचान उन्हें व्यक्तिगत या समुदाय के स्तर पर सम्पूर्ण कल्याण के लिए मानवीय संसाधन उपलब्ध कराने में मदद करेगी।

टिप्पणी

4.2 विकास संचार में विभिन्न माध्यमों का प्रयोग

भारत में विकास संचार का इतिहास 1940 के दशक में विभिन्न भाषाओं में ग्रामीण रेडियो प्रसारण से जाना जा सकता है।

क्या आपने कभी रेडियो पर ग्रामीण कार्यक्रम सुना है? यदि आप एक ग्रामीण क्षेत्र से हैं तो संभवतः आपने सुना होगा। जो लोग यह कार्यक्रम प्रस्तुत करते हैं वे उसी भाषा या बोली में बोलते हैं जिसमें आपके क्षेत्र के लोग बोलते हैं। ये कार्यक्रम खेती या सम्बन्धित विषयों पर होते हैं। इन कार्यक्रमों में विशेषज्ञ अधिकारी, कृषक के साथ भेंटवार्ता, लोकगीत तथा मौसम, बाजार भाव, उन्नत बीज तथा उपकरणों की उपलब्धता आदि सम्मिलित हो सकते हैं। अन्य सम्बन्धित विषयों पर भी यह कार्यक्रम हो सकते हैं।

1950 के दशक में सरकार ने देशभर में वृहद् विकास कार्यक्रम प्रारम्भ किये। जब 15 सितम्बर 1959 को दूरदर्शन प्रारम्भ हुआ तो यह कृषि सम्बन्धी कार्यक्रमों पर ही केन्द्रित था। आपमें से अनेक ने दूरदर्शन पर 'कृषि दर्शन' कार्यक्रम देखा होगा।

बाद में 1975 में जब भारत ने एस.आई.टी.इ (सैटेलाइट इंस्ट्रक्शनल टेलीविजन एक्सपेरिमेंट) के नाम से जाने गये टेलीविजन कार्यक्रम में प्रसारण के लिए उपग्रह का प्रयोग किया तो शिक्षा तथा विकास पर बने यह कार्यक्रम आंध्र प्रदेश, बिहार, कर्नाटक, मध्य प्रदेश, उड़ीसा तथा राजस्थान राज्यों के 2400 गाँवों के लिये उपलब्ध कराये गये।

जहाँ तक मुद्रित माध्यम का सम्बन्ध है, आजादी के बाद जब पंचवर्षीय योजनाएँ सरकार द्वारा सुनियोजित विकास के लिए शुरू की गयीं तो समाचारपत्रों ने विकास के मुद्दे को पर्याप्त महत्व दिया। उन्होंने विभिन्न सरकारी विकास योजनाओं पर तथा लोग इसका लाभ कैसे ले सकते हैं, इस पर लिखा।

भारत में रेडियो तथा टेलीविजन विशेष तौर पर आकाशवाणी तथा दूरदर्शन ने विकास सम्बन्धी संदेशों का प्रसार किया है।

फिर भी विकास संचार में प्रयुक्त सभी माध्यमों में परम्परागत माध्यम उन लोगों के सर्वाधिक निकट है जिन्हें विकास सम्बन्धी संदेश की आवश्यकता रहती है जैसे कृषक तथा कामगार। जन माध्यमों के ये रूप सहभागिता को प्रोत्साहित करते हैं तथा प्रभावी होते हैं।

आपने निर्माण में लगे मजदूरों को सड़क के किनारे अपने अस्थायी रूप से बने तम्बुओं के सामने खुले में आग जलाकर दाल और चावल का भोजन पकाते हुए देखा होगा। उन्हें संतुलित आहार, स्वच्छता, स्वास्थ्य तथा जल और सफाई के मूल्यों के बारे में जानकारी की जरूरत है। क्या आपने कभी सोचा है कि ऐसे मुद्दों पर संदेश कैसे संप्रेषित किये जाते हैं?

भारत के विभिन्न भाग में, स्वयंसेवकों के समूह नुक्कड़ नाटक का प्रयोग विकास संचार

टिप्पणी

के लिए एक माध्यम के रूप में करते हैं। यह प्रहसन (एक लघु हास्य नाटक) तथा नाटकों के माध्यम से किया जाता है जिनमें साक्षरता के महत्व, सफाई आदि को नाट्य रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसकी प्रस्तुति में दर्शकों के जीवन से ही विषय वस्तु को लिया जाता है। उदाहरण के लिये उन्हें ''संतुलित आहार'' के बारे में बताया जाता है। इसका अर्थ है उनके दाल और चावल के सादे भोजन में हरी पत्तियों वाली सब्जियों को पूरक दिया जाये। यह सब्जियाँ निर्माण श्रमिकों के बीच आम बीमारी रतौंधी के उपचार के लिए जानी जाती हैं।

इसी प्रकार, महिला निर्माण कर्मियों और उनके बच्चों को लिखना–पढ़ना सिखाया जाता है।

फिर भी विकास कर्मियों के लिए संदेश के प्रभावी ढंग से संचार की समस्या एक चिन्ता का विषय है। लोगों को कम लागत में नये कौशल कैसे सिखाये जायें? स्वास्थ्य जैसे संवेदनशील विषयों पर बात करने के लिऐ सर्वोत्तम तरीका क्या है? किस प्रकार जटिल नये अनुसंधान, जैसे कृषि के क्षेत्र में, सरलीकृत करके प्रस्तुत किये जा सकते हैं जिससे आम लोग लाभान्वित हो सकें? इनमें से एक तरीका 'कॉमिक्स' के प्रयोग का है। परन्तु इच्छित परिणाम प्राप्त करने के लिऐ ये कॉमिक्स स्थानीय स्तर पर ही बनाये जाने चाहिए।

लेकिन 'कॉमिक्स' होते क्या हैं? आप सबने एक समय में कॉमिक्स पढ़ा होगा।

कॉमिक्स दृश्यों के साथ कहानी कहते हैं। इनमें स्थानीय विचार और संस्कृति की बात होनी चाहिए जिससे लोग इसे सही–सही समझ सकें।

कॉमिक्स के विषय में महत्वपूर्ण है कि ये लोगों द्वारा उनकी ही भाषा में उनके ही मुद्दों पर बनाये जाते हैं। अतः पाठक इसे अपने दैनिक जीवन के बहुत करीब पाते हैं।

ग्रामीण संप्रेषकों को विकास संचार में कॉमिक्स का प्रयोग करने में सक्षम बनाने के लिए प्रशिक्षित करने हेतु झारखंड, राजस्थान, तमिलनाडु तथा उत्तर–पूर्व के राज्यों के दूरदराज के इलाकों में प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं।

एच.आई.वी./एड्स जैसे संवेदनशील स्वास्थ्य मुद्दों पर सूचनाएँ अनेक राज्यों में कॉमिक्स के माध्यम से संप्रेषित की जाती हैं। जबकि आप समझ सकते हैं कि विकास संचार में बहुत से माध्यमों का प्रयोग तभी संभव है जब निम्नलिखित को सम्मिलित किया जाये–

(i) विकास एजेंसियाँ जैसे कृषि विभाग

(ii) स्वयंसेवी संगठन

(iii) दिलचस्पी लेने वाले नागरिक

(iv) गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.)

टिप्पणी

जब भी हम विकास के विषय में बात करते हैं तो स्वयंसेवी समूहों, इसमें रुचि लेने वाले नागरिकों तथा गैर सरकारी संगठनों के योगदान को उपेक्षित नहीं किया जा सकता। वास्तव में समूह विकास कार्यक्रमों के क्रियान्वयन में सरकार की मदद करते हैं। केन्द्र तथा राज्य की सरकारों में भी तमाम विभाग विभिन्न मुद्दों के साथ लोगों तक पहुँचते हैं। गैर सरकारी संगठन अध्ययन करते हैं, शोध का संचालन करते हैं तथा विकास सम्बन्धी अनेक विषयों पर जागरुकता फैलाने के लिए समुचित संदेश विकसित करते हैं।

क्रियाकलाप 4.1

आप अपने आसपास स्थित किसी गैर सरकारी संगठन के पास जा सकते हैं तथा यह पता कीजिए कि विकास के लिए वे कौन सी गतिविधियाँ करते हैं।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. 'विकास संचार' की परिभाषा दीजिए।
2. विकास संचार में प्रयुक्त जन माध्यमों के विभिन्न प्रकारों की सूची बनाइये।
3. तीन समूहों का नाम लिखिये जो विकास संचार के कार्य में सक्रिय रूप से संलग्न हों।

4.3 विकास के मूल क्षेत्र

आपको जानना चाहिए कि विकास का मूल उद्देश्य लोगों के पास उपलब्ध विकल्पों को विस्तृत करना तथा एक ऐसा वातावरण बनाना है जिससे लोग दीर्घ, स्वस्थ और रचनात्मक जीवन व्यतीत कर सकें। आइये हम विकास के कुछ मूल क्षेत्रों को सूचीबद्ध करें।–

- कृषि
- मत्स्यपालन
- पशुपालन
- खाद्य सुरक्षा
- संचार
- सिंचाई

टिप्पणी

- लोक निर्माण
- रोजगार
- पर्यावरण
- पारिस्थितिकी तंत्र
- आयअर्जन गतिविधियाँ
- शिक्षा
- स्वास्थ्य व स्वच्छता
- परिवार कल्याण

यदि आप विकास संचार के कार्य में भाग लेंगे तो आपको लोगों को सूचित करने के लिये विशेषज्ञों के दिशा–निर्देश तथा सुसंगत सूचनाओं की आवश्यकता होगी। आप निम्न स्थान से विशेषज्ञों की सलाह प्राप्त कर सकते हैं–

- कृषि स्कूल व कॉलेज
- राज्य कृषि विभाग
- राज्य फलोद्यान विभाग
- विश्वविद्यालय व महाविद्यालय
- राज्य मत्स्यपालन विभाग
- सहकारी समितियों के रजिस्ट्रार
- मृदा परीक्षण प्रयोगशालाएँ
- सरकार द्वारा संचालित कुक्कुट पालन फार्म
- कृषि भवन और मॉडल फार्म
- समुदाय विकास खंड
- प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र
- पशुपालन विभाग
- सरकारी वित्तीय व बैंकिंग एजेंसियाँ
- स्थानीय गैर सरकारी संगठन
- रेशम फार्म

टिप्पणी

4.4 विकास अभियान (कैम्पेन)

आप 'चुनाव कैम्पेन(अभियान)' शब्द से परिचित होंगे। चुनाव के दौरान हम संचार का उपयोग लोगों को एक से दूसरे राजनीतिक दल को या एक से दूसरे प्रत्याशी के पक्ष में मतदान करने के लिऐ उनके वोट देने के तरीके में बदलाव के लिये करते हैं। इसके लिए हम जनसभाओं, मुद्रित सामग्री, रेडियो और टेलीविजन विज्ञापन की मदद लेते हैं। चुनाव प्रक्रिया शुरू होने से पहले ही कैम्पेन चल पड़ता है और परिणामों की घोषणा के साथ ही समाप्त होता है। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि व्यक्ति विशेष या लोगों के समूह एक विशेष प्रत्याशी या दल के पक्ष में मतदान करें।

इसी प्रकार विकास संचार के लिए भी हम मुद्रित माध्यम, रेडियो तथा टेलीविजन का इस्तेमाल कर सकते हैं। कभी–कभी ये निश्चित अवधि के समयबद्ध कार्यक्रम होते हैं। उदाहरणार्थ किसी माह का एक निश्चित रविवार पोलियो टीकाकरण के लिए निर्धारित होता है। विकास के विषय पर साप्ताहिक, पाक्षिक तथा मासिक कैम्पेन भी चलाये जाते हैं। अब हम दूसरा उदाहरण लें अपने देश में सर्वशिक्षा अभियान का। यह विद्यालय के प्रबंधन में समुदाय के सक्रिय भागीदारी के साथ 2010 तक 6–14 वय–समूह के सभी बच्चों के लिए समुचित प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने का एक प्रयास है।

विकास संचार में दिलचस्पी रखने वाले लोगों को अपने ऑडियन्स, पाठक, श्रोता या दर्शक को भी समझना होगा। उन्हें इनकी जरूरतों को भी समझना होगा जिससे जो भी माध्यम प्रयुक्त हो, संदेश प्रासंगिक रहे। इसके बाद संदेश को बेहद आकर्षक ढंग से हस्तांतरित करना होगा। भारत में विकास संचार की आवश्यकता निरन्तर बनी हुई है क्योंकि देश की बड़ी आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में बसी है और उन्हें सरकारी सहयोग की आवश्यकता है। इसीलिये सरकार द्वारा संचार अत्यधिक महत्वपूर्ण हो जाता है।

लोक सूचना अभियान जैसे संचार के नये रूपों का उपयोग गाँवों में सूचनाओं के प्रसार के लिये किया जाता है। इसमें स्थानीय समुदाय की भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया जाता है।

पाठगत प्रश्न 4.2

1. विकास के किन्हीं पाँच मूल क्षेत्रों की सूची बनाइये।

2. विकास कैम्पेन के कोई तीन उदाहरण दीजिये जो आपने हाल में किसी जन माध्यम में देखा हो।

टिप्पणी

4.5 आपने क्या सीखा

- विकास संचार की परिभाषा
- विकास संचार में विभिन्न माध्यमों का उपयोग
- विकास संचार के मूल क्षेत्र
- विकास कैम्पेन और उदाहरण

4.6 पाठान्त प्रश्न

1. उदाहरण के साथ 'विकास संचार' की व्याख्या कीजिये।
2. विकास संचार में जन माध्यमों के विभिन्न प्रकारों के प्रयोग की चर्चा कीजिये।
3. कम से कम दस दिन के लिए कोई समाचारपत्र पढ़िए और इस अवधि में जो विकास कैम्पेन आपने समझा हो उसकी सूची बनाइये।

4.7 पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. विकास संचार की परिभाषा दी जा सकती है, विकास को बढ़ावा देने के लिए प्रयुक्त संचार

2. (i) भाग 4.2 देखिये

3. (i) स्वयंसेवी संगठन

(ii) दिलचस्पी लेने वाले नागरिक

(iii) गैर सरकारी संगठन (एन.जी.ओ.)

(iv) कोई अन्य

4.2 1 (i) कृषि

(ii) मत्स्यपालन

(iii) पशुपालन

(iv) खाद्य सुरक्षा

(v) संचार

(vi) अन्य

2. उदाहरण : पोलियो टीकाकरण अभियान